प्रातः क्लास 11/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बच्चों से पूछते हैं। सबसे तो नहीं पूछ सकते। एक से पूछते हैं। नलनी बेटी से पूछते हैं कि यहाँ क्या कर रही हो? किसकी याद में बैठी हो? (बाप की) सिर्फ बाप की याद में बैठी हो, और भी कुछ याद करती हो? (दो चार से पूछा)– याद से विकर्म तो विनाश होंगे और क्या याद करते हो? याद में बैठी हो, यह तो ठीक है; क्योंकि घर में जाना है। यह तो बुद्धि का काम है ना। हम आत्माओं को अभी घर जाना है और फिर क्या करना है, क्या घर में जाकर बैठ जाना है? विष्णु को स्वदर्शनचक्र दिखाते हैं ना। उनका अर्थ भी बाप ने समझाया है। स्व अर्थात् आत्मा का दर्शन हुआ 84 जन्मों के चक्र का। तो वह चक्र भी फिराना पड़े। तुम जानते हो हम 84 का चक्र लगाकर घर जावेंगे फिर वहाँ से आवेंगे सतयुग में पार्ट बजाने। फिर 84 का चक्र लगावेंगे। विष्णु को कोई चक्र होता नहीं है वह तो सतयुग का देवता है। विष्णु पुरी कहो, ल0ना0 की पुरी कहो, स्वर्ग कहो। स्वर्ग में ल0ना0 का राज्य था। अगर राधे–कृष्ण का राज्य कहते हैं तो भूल करते हैं। राधे–कृष्ण का राज्य होता नहीं; क्योंकि दोनों अलग–2 राजाई के प्रिन्स–प्रिन्सेज थी। राजाई के मालिक तो फिर स्वयंवर के बाद बनेंगे। तो यह जो विष्णु को चक्र दिखाया जाता है चक्र यह है तुम्हारा। यहाँ जब बैठते हो तो सिर्फ शान्ति में नहीं बैठना है। वरसा भी याद करना है। इसलिए यह चक्र है। तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। और फिर बाप कहते हैं तुम लाइट हाउस भी हो। बोलता–चालता चैतन्य लाइट हाउस हो। एक आँख में है शान्तिधाम, दूसरे आँख में है सुखधाम। दोनों को याद करना पड़ता है। याद से तो पाप कटता है। अच्छा घर चले जावेंगे फिर चक्र को भी याद करना पड़े। यह सारी चक्र का नालेज तुमको ही है। हमने 84 का चक्र लगाया है। अब यह अन्तिम जन्म है इस मृत्यु लोक में। नई दुनिया को कहा जाता है अमरलोक। अमर अर्थात् तुम सदैव जीते रहते हो। वहाँ तुम कब मरते नहीं हो। यहाँ तो देखो अचानक बैठे2 मृत्यु हो जाती है। बीमारियाँ आदि होती है। वहाँ (म)रने का डर नहीं; क्योंकि अमरलोक है। तुम बूढे होते हो भी ज्ञान है हम फिर गर्भ महल में जाकर प्रवेश करेंगे। अभी जाते हैं गर्भ जेल में। वहाँ तो गर्भ महल होता है। वहाँ पाप तो करते ही नहीं जो सजा भोगनी पड़े। यहाँ तो बहुत पाप करते हैं जिस कारण सजा भोग बाहर निकलते हैं, तो फिर पाप शुरू कर देते हैं। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। रावण–राज्य। गर्भ में भी सजा भोगते फिर बाहर में भी कोई न कोई दुख रहता है। वहाँ तो दुख होता ही नहीं। वहाँ तो दुख का नाम नहीं। तो एक आँख में शान्तिधाम। दूसरे आँख में सुखधाम रखो। भल तुम जन्म–जन्मान्तर, जप–तप तीर्थ आदि जन्म व जन्म करते आये हो; परन्तु वह ज्ञान तो नहीं है। वह है ही भक्तिमार्ग। उस.... कोई मुक्ति भी नहीं मिलती। कोई युक्ति भी नहीं मिलती कि तुम ऐसे सतोप्रधान बन सकते हो। कोई भी साधु–सन्त यह नहीं जानते। सुना है कृष्ण भगवानुवाच देह सहित देह के सभी धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। यह गीता के ही अक्षर हैं। वह पढ़कर सुनाते हैं। ऐसे नहीं कहते कि तुम ऐसे बैठो। सिर्फ पढ़ते हैं भगवान ऐसे कहकर गया था, जब आया था पतितों को पावन बनाने। सिर्फ गीता में परमपिता–परमात्मा के बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है। अब कृष्ण तो रथ है ना। उनको रथ चाहिए क्या? वह तो खुद ही देहधारी है। कृष्ण का नाम किसने रखा? जैसे छठी होती है नाम तो सभी के पड़ते हैं। बाप को तो सिर्फ शिव ही कहा जाता है। तुम आत्माएँ जन्म–मरण में आते हो तो शरीर का नाम बदलती जाती है। शिवबाबा तो जन्म–मरण में आते ही नहीं। वह सदैव शिव ही है। बिन्दी जब लिखते हैं तो कह देते हैं शिव। बिन्दी। आत्मा तो है अति सूक्ष्म। आत्मा का अगर सा0 होता भी है तो भी किसको समझ में नहीं आता। भक्तिमार्ग में सा0 की चाहना बहुत रखते हैं। इसको कहा जाता है नवधा भक्ति। सा0 के लिए अपना शरीर भी दे देंगे। देवी को देकर खुश हो जावेंगे। अच्छा फिर क्या। प्राप्ति तो कुछ भी नहीं। अर्थ समझते नहीं। सिर्फ नवधा भक्ति की, दर्शन किया तो उसमें ही खुश हो जाते हैं। अल्पकाल लिए मनोकामना पूरी हो जाती है। बाकी मुक्ति–जीवनमुक्ति की तो बात ही नहीं। वह सभी है भक्तिमार्ग। यहाँ है ज्ञान मार्ग। यहाँ अक्सर करके सा0 होता है ब्रह्मा का फिर

श्री कृष्ण का होगा। कहेंगे इस ब्रह्मा के पास जाओ तो तुम श्रीकृष्णपुरी बैकुण्ठ में जावेंगे। ल0ना0 का भी सा0 हो सकता है। ऐसे नहीं कि सा0 हुआ माना सद्गति हो गई। नहीं। यह सिर्फ इशारा मिलता है यहाँ जाओ। आगे चलकर बहुतों को सा0 होंगे डायरेक्शन मिलेंगे। तुम्हारा त्रिमूर्ति भी अखबार में पड़ता है। ब्रह्माकुमारियों का नाम भी पड़ता है। तो ब्रह्मा का भी सा0 होगा कि इनके पास जाने से तुमको यह बैकुंठ का प्रिन्स प्रिन्सेज बनने का ज्ञान मिलेगा या विष्णु ल0ना0 का सा0 होगा। जैसे अर्जुन को विष्णु का और विनाश का सा0 हुआ। तो यह बाप बैठ समझाते हैं तुमको ऐसे कमल फूल समान पवित्र बनना है; परन्तु स्थाई तो तुम नहीं रहते हो इसलिए यह अलंकार विष्णु को दे दिये हैं। नहीं तो देवताओं को शंख आदि की दरकार है क्या? मुख से सुनाने को ध्वन कहा जाता है। कमलफूल का राज़ भी बाप समझाते हैं तुम ब्राह्मणों को इस कमलफूल समान ऐसा बनना है। गदा है 5 विकारों रूपी माया को जीतने को। बाप उपाय बताते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। श्रीमत पर पतित–पावन बाप को याद करो। दूसरा तो कोई पावन है नहीं सिवाय एक बाप के। बाप कहते हैं मुझे बुलाते ही हो इसलिए कि हम सबको इस शरीर से छुड़ाकर पावन दुनिया में ले चलो। मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गधाम पधारा। आत्मा भागती है ना। बाप ही आकर सभी आत्माओं को पतित से पावन बनाते हैं; क्योंकि अपवित्र आत्माएँ घर में वा स्वर्ग में जा नहीं सकतीं। बाप कहते हैं पवित्र बनना है तो मुझे याद करो। याद से ही तुम्हारे पाप कटते जावेंगे। यह मैं गैरन्टी करता हूँ। बुलाते ही हैं हे पतित–पावन आओ हमको पावन बनाकर नई दुनिया में ले चलो। तो कैसे जावेंगे, कितनी सीधी बात बताते हैं। बाप की सहज नॉलेज और सहज बात है। कहते हैं काम–काज करते हुए मुझे याद करो। नौकरी आदि भल करो, भोजन बनाओ, तो भी याद में रह करो तो पावन बनते जावेंगे। भोजन भी शुद्ध होगा इसलिए गाया जाता है ब्रह्मा भोजन लिए देवताओं को भी दिल होती है। यह बच्चियाँ भी भोग ले जाती है वहाँ महफिल होती है। ब्राह्मणों और देवताओं का मेला लगता है। भोजन स्वीकार करने आते हैं। ब्राह्मण लोग जब भोजन पान करते हैं तो यह मंत्र जपते हैं ब्रह्मा भोजन.....सन्यासी लोग तो ब्रह्मा को ही याद करते होंगे। उन्हों का तो ज्ञान ही उल्टा है। बाप तुमको इन गुरुओं के जंजीर से छुड़ाते हैं। वह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। उनका धर्म ही अलग है। वह है हद के सन्यासी। कहते हैं हमने घर–बार मिलकियत आदि सब छोड़ा है। फिर अभी अन्दर घुस पड़े हैं। अभी तुम्हारा तो है बेहद का सन्यास। तुम इस पुरानी दुनिया को ही भूल जाते हो। तुमको फिर जाना है नई दुनिया में। गृहस्थ में रहते बुद्धि में यह है कि अभी हमको जाना है सुखधाम वा शान्तिधाम। शान्तिधाम को भी याद करना पड़े। बाप को, सुखधाम को ,शान्तिधाम को याद करते हैं। यह हमारा बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। 84 जन्म पूरे किये। बाप बैठ समझाते हैं इतने जन्म तुम सूर्यवंशी थे, इतने जन्म चन्द्रवंशी.....वह लोग फिर कह देते आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। आत्मा को कोई लेप–छेप नहीं लगता; क्योंकि आत्मा ही परमात्मा है। बाप कहते हैं यह भी उन्हों का उल्टा अर्थ है। बाबा बैठ हम सो का अर्थ समझाते हैं। हम आत्मा परमपिता की सन्तान हूँ। पहले–2 हम स्वर्ग में आते हैं। हम स्वर्गवासी देवी–देवताएँ थे। फिर नीचे उतरते आये हैं। हम सो चन्द्रवंशी क्षत्री, 2500 वर्ष पूरा हुआ फिर हम सो वैश्यवंशी विकारी, शूद्रवंशी विकारी बने। अभी तुम कहेंगे अब हम शूद्र से ब्राह्मण चोटी बनते हैं। यहाँ बैठे हैं जैसे कि 84 के बाजोली खेलते हैं। यह बाजोली का भी ज्ञान है। आगे तीर्थों पर जाते थे तो भी ऐसे बाजोली करते निशान डालते जाते थे। अभी तुम्हारा तो सच्चा तीर्थ है शान्तिधाम और सुखधाम। तुम हो रूहानी पण्डे। सभी को राय देते हो बाप को याद करो तो शान्तिधाम चले जावेंगे। साधु–सन्त आदि सभी शान्तिधाम जाने लिए मेहनत करते हैं; परन्तु जा कोई भी नहीं सकते हैं। जावेंगे फिर भी सरा लाट इकट्ठा। बाप ने समझाया है सतयुग में तो बहुत थोड़े देवी–देवताएँ होते हैं फिर वृद्धि होती जाती है। तो स्वदर्शनचक्रधारी तुम हो। देवताएँ नहीं हैं; परन्तु इस समय तुम्हारी माया के साथ युद्ध चल रही है। उस लड़ाई में भी जिसको जोरदार समझते हैं तो उनके पास जाकर शरण लेते हैं। अभी तुम किसके शरण लेते हो।

स्त्री–पुरुष दोनों कहते हैं हम शरण पडी तेरी। मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। सभी आत्माओं का बाप तो एक है ना। उस एक के तुम बच्चे हो। साधु–सन्त तो एक नही हैं। तो अनेक भगवान हो जाते। जो घर से रूठे वह भगवान। कितने भगवान पास धक्का खाते हैं। मुस्लमान को भी जाकर गुरु करते। वह सिखलाते हैं अल्ला हूँ अल्ला हूँ बोलो। बड़े–2 साहूकार, करोड़पति उन्हों के जाकर शिष्य बनते हैं। फिर महफिल मनाते गंदे खान–पान की। तमोप्रधान मनुष्य हैं ना। हर हफ्ते जाकर वहाँ बांग भरते हैं। इनको धर्म की ग्लानि कहेंगे ना। कितनी मूर्खता है। हिन्दुओं को अपने धर्म का पता नहीं। बाप समझाते हैं वास्तव में तुम आदि–सनातन देवी–देवता धर्म के हो; परन्तु पतित बन गये हो इसलिए तुम अपने को देवी–देवता कहला नहीं सकते हो। वह धर्म ही प्रायः लोप हो गया है। आदि–सनातन देवी–देवता धर्म के बदली आदि–सनातन हिन्दू कह देते हैं। आत्मा जानती है हम पतित हैं। नाम तो बहुत बड़े रख दिये हैं। श्री–श्री माना डबल श्रेष्ठ। बाप को कहा जाता श्री–श्री। देवताओं को सिर्फ कहेंगे श्री। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ भगवान तुमको ऐसा श्रेष्ठ बनाते हैं। गवर्मेन्ट तो कुत्ते–बिल्ले आदि सभी को श्री–2 कह देती हैं। पतितों को पावन, श्रेष्ठ बनाने वाला तो एक ही है। यह फिर पतित मनुष्यों को श्री–2 का टाइटल देते हैं। इसको कहा जाता है अंधेर नगरी..... सभी को श्री–2 कह देते। श्री फलाना श्री फलाना का टाइटल देते। हैं कितने विकारी। क्रिमिनल आई वाले। एक मिनिस्टर बाबा के पास आया था। कहा हमारी तो क्रिमनल आई जाती है। अभी बाप समझाते हैं बच्चे सिविल आई बनो। जब तक क्रिमिनल आई है तब तक तुम पतित हो। अपन को भाई–2 समझो। तो क्रिमनल दृष्टि उड़ जावेगी। हम आत्माएँ भाई–2 हैं। एक बाप से वर्सा ले रहे हैं। आत्मा का तख्त है भृकुटि। इसको कहा जाता है अकाल तख़्त। अकाल आत्मा इस तख़्त पर विराजमान है। यह तो मिट्टी का पुतला है। सारा पार्ट आत्मा में भरा हुआ है। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ। तुम जानते हो हम आये हैं हेल्थ और वेल्थ हैपीनेस का वर्सा लेने। सतयुग में अथाह धन मिलता है। तुम 21 पीढ़ी सुखी रहते हो। बुढ़ापे बिगर कोई मरेगा नहीं। यहाँ तो बैठे–2 अचानक मर पड़ते हैं। गर्भ में अन्दर ही मर पड़ते हैं। वहाँ तो दुख का नाम निशान नहीं। उनको कहा जाता है सुखधाम। रामराज्य। यह है दुखधाम। रावणराज्य। सतयुग में रावण होता ही नहीं। यह तो 84 का चक्र भी बुद्धि में याद रहेगा तो बहुत खुशी रहेगी। तुम जानते हो हम नई दुनिया अर्थात् विश्व के मालिक बनने वाले हैं। गीता में भी भगवानुवाच है ना। हे बच्चों देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ो। अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। तुम्हारा सच्चा–2 खुदा दोस्त वह है। अल्ला अवलदीन का नाटक, हातमताई का नाटक सभी इस समय की बातें हैं। अभी मनुष्य कितना माथा मारते रहते हैं बच्चे कम हों। बेहद का बाप कितना कम कर देते हैं। सारे विश्व में सतयुग में 9 लाख आबादी जाकर रहती है। बाकी इतने 500 करोड़ मनुष्य होते ही नहीं। सभी मुक्ति, शान्तिधाम चले जाते हैं। यह तो करामत बाप की है ना। एक देवी–देवता धर्म का फाउंडेशन लगाये बाकी सभी का विनाश कर देते हैं। यह 84 का चक्र अच्छी रीति बुद्धि में बिठाना है। यह है स्वदर्शनचक्र। बाकी चक्र से कोई गला आदि नहीं काटना है। शास्त्रों में फिर श्रीकृष्ण के लिए हिंसक बातें लगा दी हैं, सबको स्वदर्शनचक्र से मारा। यह भी ग्लानि हो गई ना। कितना हिंसक बना दिया है। तुम डबल अहिंसक बनते हो। काम–कटारी चलाना यह भी हिंसा है। देवताओं को तो पवित्र कहा जाता है। योगबल से जब कि विश्व का मालिक बन सकते हो तो योगबल से बच्चे पैदा क्यों नहीं हो सकते हैं। सा0 होगा अभी बच्चा होना है। बाबा तो समझते हैं अभी यह पुराना शरीर छोड़ेंगे और गोल्डन स्पून इन माउथ। तुम भी समझते हो हम अमरलोक में जन्म लेंगे। गोल्डेन स्पून इन माउथ होगा। प्रजा के पास थोड़े ही इतना धन माल रहता है। बाकी हाँ, सुख होगा। आयु बड़ी होगी। राजा–रानी, साहुकार प्रजा, गरीब प्रजा सभी चाहिए। दुख की कोई भी बात ही नहीं। अच्छा। मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। और नमस्ते।

''अटेन्शन प्लीजः– अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो''